15
STORY

स्वछंद उड़ान

A COLLECTION OF STORIES OF ECONOMICALLY EMPOWERED WOMEN

Association of Professional Social Workers & Development Practioners (APSWDP)
CHANDIGARH, INDIA
www.apswdp.org

स्वछंद उड़ान

स्वछंद उड़ान

A COLLECTION OF STORIES OF ECONOMICALLY EMPOWERED WOMEN

UNDER USHA SILAI SCHOOL (USS) PROGRAMME CHANDIGARH (INDIA)

Hindi Edition

Translation By
Navneet Trivedi

Compiled By
Rekha Trivedi
Sandeep Kaur

Edited by
Dr. Joginder Kumar Yadav
Dr. Monica Singh

Association of Professional Social Workers & Development Practioners (APSWDP)
CHANDIGARH, INDIA
www.apswdp.org

स्वछंद उड़ान : 'स्वछंद उड़ान' महिला कौशल विकास और आर्थिक सशक्तीकरण पर उषा सोशल सर्विस, उषा इंटरनेशनल लिमिटेड और एसोसिएशन ऑफ प्रोफेशनल सोशल वर्कर्स एंड डेवलपमेंट प्रेक्टीशनर्स के सहयोग से चलाये गये प्रशिक्षण शिविर तथा उषा सिलाई स्कूलों में प्रशिक्षण प्राप्त 15 महिलाओं की कहानियों के संग्रह का हिंदी संस्मरण है। यह कहानी संग्रह समाज में रह रही शोषित महिलाओं के लिये एक प्रेरणा स्त्रोत है।

Published by Association of Professional Social Workers & Development Practitioners (APSWDP), August 2016.

Copyright © APSWDP August 2016

Translation By: Navneet Trivedi
Story written By: Sandeep Kaur, Meet Nimaan
Compiled By: Rekha Trivedi
Edited by: Dr. Monica Singh, Dr. J. K. Yadav and Dr. Sumit Arora
Cover Design: Meet Nimaan
Concept Design: Vivek Trivedi
Support: Karamveer Singh, Seema Punia, Meenakshi, Meera
Printed at: Capital Graphics & Printers, Sector-17,Chandigarh.

Address: Post Box No. 324, Sector-11.D, Chandigarh-160011
E:mail- apswdp@gmail.com
Website: www.apswdp.org

क्रमांक

1. मेरी आर्थिक स्वतंत्रता : 5

2. मेरे बढते कदम : 7

3. हुनर के पंख, ऊँची उड़ान : 9

4. महिला सशक्तिकरण : 11

5. आत्मनिर्भरता : 12

6. बढ़ता आत्मविश्वास : 13

7. आज़ादी का जीवन : 15

8. मेरा साहस मेरी मंजिल : 17

9. सपनों की उड़ान : 18

10. चाहत आगे बढ़ने की : 20

11. मेरा हुनर मेरी मंजिल : 21

12. मेरी जागरूकता : 23

13. इच्छाओं के पंख : 25

14. नई आशा : 26

15. एक ऊमंग : 27

1. मेरी आर्थिक स्वतंत्रता

जिंदगी मं लगन और आत्मविश्वास से ही आगे बढ़ा जा सकता है इसकी जोती जागती उदाहरण रूबी देवी है। रूबी देवी एक साधारण सी दिखने वाली महिला है जिसकी ऑखो में आत्मविश्वास और अन्दर से अपने काम के प्रति खूब लगन झलकती है।

रूबो देवी ने एक साल पहले सिलाई की ट्रेनिंग ली थी और उसके बाद अपना ऊषा सिलाई स्कूल चलाना शुरू किया। एक छोटे से कमरे में 10–12 लडकियां और महिलाओं को सिखाती हैं। रूबी देवी का कहना है कि

जब से ऊषा सिलाई स्कूल शुरू किया है उनको एक नई पहचान मिली हैं। ऊषा सिलाई स्कूल चलाकर वह आत्मनिभर हुई है, और उनकी आमदनी शुरू हुई इसको वह अपने घर के खर्च और बच्चो की शिक्षा पर खर्च करती हैं। जिससे उसके परिवार को बहुत खुशी होती है। रूबी देवी कहती हैं कि वह ऊषा का धन्यवाद करती है जिसके कारण वह अपने आप को समाज में साबित कर पाई, और धन्यवाद करती है ASPWDP का जिसने सिलाई के बारे में

जागरूक किया है। रूबी देवी अपना जीवन अपने बलबूते पर चलाकर बहुत खुश है।

आज वो सिलाई से लगभग 5000 रुपये प्रति महीना तक कमा रही है जिसको वो अपने बच्चों की शिक्षा और अपने परिवार को एक स्वच्छ जीवन जीने के लिए खर्च कर रही ह।

***

2. मेरे बढ़ते कदम

जिन्दगी में कुछ करने की चाहत हो तो रास्ते भी अपने आप बन जाते है। इसी तरह से ऊषा रानी की इच्छाओं को पंख तब लगे जब ASPWDP द्वारा उनको ऊषा सिलाई मशीन दिलाई गयी।

ऊषा रानी ने सिलाई का काम शादी से पहले शुरू किया था। अब वे इसको काफी ऊंचे स्तर पर लेकर जाना चाहती हैं इसमें उसका परिवार साथ दे रहा है। ऊषा और ASPWDP आज वो अपने घर पें 8 विद्यार्थी को सिलाई का काम सिखा रही है।

उनका कहना है कि उनके परिवार की आमदनी काफी कम थी। इस वजह से उसने शादी के बाद भी सिलाई का काम जारी रखा। डॉ. मोनिका से मिलके ही इस काम को इस मुकाम तक ल जाने का मौका मिला।

आज वो लगभग 5000 रुपये प्रति माह तक कमा रही है। जिससे उनके परिवार का पालन पोषण में अपने पति का हाथ बटाँ रही हैं। वो आज अपने पैरो पर खडो हैं। और बाकी महिलाओं के लिए एक मिसाल पैदा कर रही हैं।

वह USHA और ASPWDP का धन्यवाद करतो है कि कम पढ लिखे होने के बावजूद आगे बढने तथा समाज में एक नई पहचान बनाने का मौका दिया।

आज उनके परिवार को भी उन पर गर्व है, उनसे जो विद्यार्थी सीख रह हैं वो भी बहुत खुश हैं। उनको अपना आदर्श मानते हुए जिन्दगी में मेहनत करके आगे बढना चाहते है। अतः ये सभी एसे कार्यक्रम करवाने वाली सस्थाओं और इससे जुडे लोगों को सलाम करते हैं।

हालांकि ऊषा के पास जगह की थोड़ी सी कमी हैं पर फिर भी वह लगभग 10 विद्यार्थियों को सिलाई सिखा रही हैं। वह **APSWDP** की इस की गई पहल को और भी उच्च स्तर पर लेकर जाना चाहती है तथा वह इसके लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। आज वह अपने सिलाई के काम के कारण ना सिर्फ अपने गाँव में बल्कि आसपास के गाँवों में भी अपनी पहचान बना चुकी है। जिसका सारा श्रेय वे ऊषा तथा **APSWDP** को देना चाहती हैं। जिन्होंने ने उसकी गरीबो से लड़ने तथा आत्मनिर्भर होकर समाज में आगे बढ़ने का साहस प्रदान किया।

***

3. हुनर के पंख, ऊँची उड़ान

जिन्दगी म जब कुछ करने की इच्छा हो तो सब कुछ आसान हो जाता है। जिंदगी में जब कुछ कर दिखाने का जज्बा होता है तो हर मुश्किल को पार कर के आगे बढा जा सकता है। शरणजीत कौर ने अपनी लगन और मेहनत से इस कहावत को साबित कर दिया है।

शरणजीत कौर एक हँसमुख महिला हैं जो अपने विवाहित जीवन के बावजूद भी अपना सिलाई का काम बखूबी चला रही हैं ।

एक साल पहले उसने ट्रेनिंग लगाई और सिलाई के हुनर को और निखारा है। अब वह अपना ऊषा सिलाई स्कूल चला रही हैं उसके घर में जैसे चहल पहल सी लगी रहती है। और महिलाएँ सीखने आती हैं और हॅसी और खेल–खेल में सिलाई का काम भी करती है।

आज शरणजीत का आत्मविश्वास बहुत उपर उठ चुका है। उसको अपना हुनर बाँटकर बहुत खुशो होती है और इसके अलावा उसको आमदनी भी होती है जिससे वह आत्मनिर्भर बन पाई हैं।

आज शरणजीत के पास 6 महिलाएँ सीखने आतो हैं और लगभग वह 20 महिलाओं को सिलाई सिखा चुकी हैं और अपना सिलाई स्कूल सफलतापूर्वक चला रही है।

वह महीने में लगभग 4000–5000 रुपये कमा रही हैं जिसको वह अपनी इच्छा से अपने परिवार के कल्याण के लिए खर्च कर रही हैं। आज आर्थिक तौर पर पूरी तरह से सशक्त हैं। अतः वह **APSWDP** का धन्यवाद करती है जिसने उनके सपनों को पंख लगाने में सहयोग दिया।

***

4. महिला–सशक्तिकरण

सीमा अपनी दसवी की शिक्षा के बाद सिलाई का काम करने लगी और शादी के बाद भी इसको जारी रखा है। शुरू–शुरू में कुछ दिक्कत आयीं पर फिर भी हिम्मत नहों हारी, उसके बाद ऊषा सिलाई ट्रैनिंग स्कूल में लगकर काफी कुछ सीखा और ऊषा सिलाई स्कूल चलाना शुरू कर दिया । और आज उनके पास 6 विद्यार्थी हैं और स्कूल को बहुत अच्छी तरह से चला रही हैं। उनसे काम सोखकर बहुत सारी लड़कियां ने अपना काम भी शुरू किया है जिससे उनको आमदनी होती है। और वह इससे आत्मनिर्भर भी हो गई है। सीमा ने सिलाई को अपना रोजगार बनाया है, जिससे उनको बहुत खुशी होती है और परिवार से भी इज्जत मिलती है। आत्मनिर्भर होकर जिंदगी जीना सीखा इसलिए ए.पी.एस.डब्लु.डी.पी. और ऊषा का धन्यवाद करती हैं जिसके कारण उनके जीवन को आत्मनिर्भर होने का मौका मिला है। आज वह 5000 से 6000 रुपये प्रति महीना कमा लेती है। जिसे वह अपने परिवार में खर्च करती हैं और बच्चों की शिक्षा के लिए भी खर्च करती हैं।

अंत में वो **APSWDP** का धन्यवाद करती हैं जिन्होंने सीमा को अपने पैरों पर खड़े होने का मौका दिया तथा उसको अपने औरत होने पर गर्व महसूस कराया। आज उसका परिवार भी उसके साथ है तथा सीमा को आगे बढ़ता देख गर्वित महसूस कर रहा है।

***

5. आत्म निर्भरता

रूपिंदर कौर सीधे–साधे और साधरण से स्वभाव की महिला जिसके चेहरे पे आत्मविश्वास की झलक नजर आती है। रूपिंदर कौर ने 12 वीं तक पढ़ाई की पर कुछ कारणा स पढ़ाई छोडनी पड़ी और कुछ समय बाद शादी हो गई।

मगर शादी के बाद सिलाई का काम शुरू किया जो कि उनको उनकी माँ से विरासत मे मिला था।

उनका कहना है कि उषा सिलाई के सात दिनों की ट्रेनिंग में बहत कुछ सीखा और अपने हौसले को और बढाया। ऊषा सिलाई स्कूल शुरू किया जिसको वह चलाकर अपने घर का खर्चा चलाने मे अपने परिवार की मदद कर पाई है। उनके पास दो लड़कियाँ आती हैं जो बहुत अच्छा काम सीख रही हैं। रूपिंदर कौर पहले खुद सीखकर बाद मे शाम को अपने स्टूडेंट्स को सिखाती हैं।

उनका कहना है की ऊषा सिलाई स्कूल को चलाकर वह आत्म निर्भर हुई और घर की आमदनी में अपना योगदान दे पायीं। वह उषा और APSWDP का बहुत धन्यवाद करती हैं, जिन्होने उनको इस नए मुकाम पर पहुँचाया।

इसके साथ ही वो अपनी मासिक आय जो कि लगभग 3000 रुपये है को अपने परिवार के कल्याण के लिए अपनी इच्छा से खर्च कर रही हैं। उसका परिवार भी इसमें उनकी पूरी मदद कर रहा है तथा वो रूपिंदर को समाज में अपनी अलग पहचान बनाते देख बहुत गर्व महसूस करता है। अंतः रूपिंदर इसके लिए **APSWDP** का बहुत ध्न्यवाद करती हैं।

***

6. बढ़ता आत्मविश्वास

रमना देवी न नवम्बर 2015 में अपना उषा सिलाई स्कूल शुरू किया था और महिलाआ तथा लड़कियों को सिलाई सिखाना शुरू किया और धीरे–धीरे उनकी अपनी एक नई पहचान बनाई।

रमना देवी का कहना है कि वह उषा तथा APSWDP का धन्यवाद करती हैं, जिसने उसे आत्म निर्भर बनाया है। वह अपने घर को चलाने में मदद करती हैं, जिससे उसका परिवार खुशी से अपना जीवन बिता रहा है। रमना देवी का आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया हैं। जिंदगी एक संघर्ष है यह तो सब को पता है मगर फिर भी कुछ लोग अपना हौसला और आत्मविश्वास ना खोकर यह संघर्ष करते रहते हैं और अपने जीवन में कुछ नया करते हैं।

उन्हीं लोगा में से है रमना देवी जिसने अपनी दसवीं तक पढ़ाई के बाद शादी हाने पर भी अपना सिलाई का काम नहीं छोड़ा। कुछ घरेलु समस्याओं के कारण उसको अपनी पढ़ाई छोड कर शादी करनी पडो। अब रमना देवी अपने पति और तीन बच्चों के साथ अपना जीवन जी रही हैं।

उसने **APSWDP** द्वारा चलाया गया **Training Programme** द्वारा बहुत कुछ तथा अपने हुनर को पहचाना। आज वो 2000 रुपये प्रति महीना कमा कर अपने परिवार की मदद करती हैं। हालांकि उसकी जिन्दगी में बहुत सी मुश्किलें है, जैसे बच्चे बहुत छोटे हैं, जगह की कमीं है पर फिर भी वह ऊषा सिलाई स्कूल को आगे ले जाने के दिलों–जान से मेहनत कर रही हैं। इनके इस हौसंले तथा लगन को देखकर **APSWDP** तथा इसके सभी सदस्य सलाम करते हैं। रमना

जी भी इनका हृदय से ध्न्यवाद करती हैं जिन्होंने इनको आगे बढ़ने का मौका दिया है।

***

7. आज़ादी का जीवन

जिन्दगी में आगे बढने वालो को रास्ते में आने वाली हर मुश्किल को पार करने की आदत सी पड़ जाती है। उनको इन चुनौतिओं का समाना करके जीने में ही मजा आता है। उनका दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास उनको मंजिल तक पहुँचा ही देता है।

ऐसी ही एक कहानी है पूजा की जो कि खुडडा लाहौरा की रहने वाली एक साधारण सी महिला हैं, जो कि लगभग एक साल पहले उषा सिलाई स्कूल से जुडो थीं। उसने जरूरतमंद लोगा को सिलाई सिखाना शुरू किया, अब तक वो लगभग 22 महिलाओं को सिखा चुकी हैं। और वो सिखा भी रही हैं।

इससे पहले उनको घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। पर जब से वो ऊषा के साथ जुडो हैं तो उनके घर वालों ने उनका भरपूर साथ दिया, इसके बाद उनको कहीं भी आने जाने की आजादी दी। जिससे उनको खुलकर जोने का अहसास हुआ। और आज वो कई संस्थाओं से जुडो हैं और उनके कार्यक्रम में जाती रहती हैं। जिससे उनका आत्मविश्वास बढा है और समाज में सिर उठाकर जीने का अधिकार मिला है आज वो अपने परिवार की आर्थिक तौर पर मदद भी करती हैं और साथ ही उनकी वजह से उनके परिवार को उनके नाम से जाना जाता है। जो कि उनके लिए एक गर्व की बात है। उनका कहना है कि ASPWDP जो कि सामाज के लिए बहुत अच्छा काम कर रही है, मैं उनका धन्यवाद करती हूँ कि मुझे अपने पैरा पर खड होने का तथा उनके परिवार की समाज में पहचान बनाने का मौका प्रदान किया। ये अपने सिलाई स्कूल को बहुत

अच्छे ढंग से चला रही है। वह चाहती है कि ASPWDP जैसी संस्थाओं को और बढावा देना चाहिए ताकि उनके जैसी और महिलाओं को भी आगे बढने का मौका मिले।

***

8. मरा साहस मेरी मंजिल

समाज में महिलाओं का आज अपना एक अलग रूतबा कायम होने लगा है जिससे पता चलता है कि हमारे देश में महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है।

रेनू जो कि एक विवाहित महिला है और वह दो बच्चा की माँ है। आज अपने सिलाई के हुनर से पैसे कमाकर अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

रेनू का कहना हैं कि एक साल पहले जब उषा सिलाई ट्रेनिंग कैंप लगाया था तो बहुत कुछ सीखा और उषा सिलाई स्कूल चलाना शुरू किया और महिलाओं को सिखाना शुरू किया और सफलता भी पाई । अब उनके पास महिलाएँ और लड़कियाँ सीखने आती हैं। जिससे उनको बहुत खुशो होती है। द्सरो को सिखाकर अध्यापक जैसा महस्स करती हैं। इस स्कूल से जुड़के उनमें आत्मविश्वास पैदा हुआ तथा आगे बढ़ने की चाहत भी।

उषा और **APSWDP** का वह धन्यवाद करती हैं जिन्होनें उनके जीवन को आत्मनिर्भर होने और जिंदगी को जीने का अवसर दिया है।

आज रेनु सिलाई करके लगभग 3000 रुपये प्रति महीना कमा रही है जिसको वो अपनो मर्जी से अपने परिवार के कल्याण में खर्च कर रही हैं। आज वो आर्थिक तौर पर पूरी तरह सशक्त हैं तथा समाज में अपनी अलग पहचान बना चुकी है। जिसका श्रेय वह **APSWDP** तथा उषा सिलाई स्कूल को देती हैं जिन्होंने उसको आगे बढ़ने का मौका प्रदान किया।

***

9. सपनों की उड़ान

सुनीता गर्ग जो कि अगस्त 2015 में उषा सिलाई स्कूल के साथ जुडो थीं हालांकि वो शादी से पहले भी सिलाई करती थीं। पर पारिवारिक जरूरतों के लिए और अपने शौक के लिए शादी के बाद भी उन्होंन ये काम जारी रखा।

उनके मुताबिक उषा सिलाई स्कूल के साथ जुडने के साथ उनको नई पहचान मिली, उनके काम को नया तरीका और अच्छे ढंग से सिलाई करने को उत्साह मिला।

उन्होनं कई जरूरत मंद लोगों की सहायता करने के लिए उनको सिलाई सिखायी। कुछ लोगो ने उनको पैसे भी दिये जिससे उन्होनें अपने बच्चों की पढाई करवाई तथा घर चलाने में भी मदद की।

इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा तथा ए.पी.एस.डब्लु.डी.पी. द्वारा जो ट्रेनिंग कार्यक्रम चलाया गया, उनके साथ काम करके अपने काम को ज्यादा अच्छे तरीके से करने की प्रेरणा मिली।

महिलाओं को सिखा के एक अध्यापिका जैसा महसूस होता है। उनका दूसरी पढ़ी लिखी औरतो की तरह समाज में गर्व से सिर उठाकर जीने का मौका मिला।

पर अभी उनके सिलाई स्कूल पर कोई महिला नहीं आ रहीं हैं। उनका कहना है कि वह मेहनत कर सिलाई स्कूल को भविष्य में आगे बढ़ायेगीं।

***

10. चाहत आगे बढ़ने की

अन, साधारण से परिवार मे पली–बढो एक लडकी है। जिसका शौक था सिलाई करना और दूसरों को सिखाना।

अनु बी. ए. कर रही हैं और सिलाई भी करती हैं। उसने ऊषा सिलाई ट्रैनिंग को पूरा किया और लगभग एक साल पहले उषा सिलाई स्कूल शुरू किया था। मगर कुछ कारणों से स्कूल चलाने में असमर्थ रहीं।

उनके अनुसार उनके आसपास रहने वाली लड़कियाँ सीखना नहीं चाहती, वह बाहर कामकर के अपना घर चलाना चाहतो हैं। अनु का कहना है कि लड़कियाँ पैसा नहीं देती और ना ही सीखना चाहती हैं। आस–पास सरकारी सिलाई सेंटर खुल गये हैं जिसके कारण बहुत सी लडकियाँ वहाँ सीखने जाती हैं। अनु कुछ नया करना चाहती थीं पर कर नही पायीं। उसने कहा की सिलाई को आजकल जायदा महत्व नहीं दिया जाता जिसके कारण लडकियाँ सीखना नहीं चाहती है।

लेकिन फिर भी उन्होंने **APSWDP** द्वारा लगाई गई ट्रेनिंग से बहुत कुछ सीखा और अपने सिलाई के हुनर को और निखारा। अब वो सिलाई करके लगभग 3000 रुपये तक की महीने में कमाई कर लेती हैं। जिसको वो अपनी पढ़ाई पर खर्च कर रही है और अपने पढ़ने का सपना पूरा कर रही हैं। इसके लिए वो **APSWDP** का तह दिल से धन्यवाद करती हैं, जो उनके सपनों को पूरा करने में पूरा सहयोग कर रहा है।

***

11. मरा हुनर मेरी मंज़िल

गीता देवी साधारण सी महिला है जिसका अपना एक छोटा सा परिवार है और एक छोटा सा बच्चा भी है। उसने बताया कि अगस्त 2015 में ऊषा सिलाई स्कूल शुरू किया था और कुछ महोनों तक अच्छी तरह से सिलाई सेंटर चला पाई मगर बाद में महिलाओं ने आना बंद कर दिया । और छोटा बच्चा होने के कारण वह ज्यादा सिलाई का काम आगे नही बढा सकी पर उसका कहना है कि फिर भी उषा सिलाई स्कूल चलाकर बहुत कुछ सीखने को मिला इससे उसने अपनी आमदनी भी शुरू की है।

गीता देवी सिखाने के साथ–साथ कपड़े भी सिलती है जिससे वह कुछ पैसे कमा लेती हैं। और अपने पति के साथ अपना परिवार चलाने में मदद करती हैं।

गीता देवी का कहना है कि उषा सिलाई स्कूल चलाकर वह समाज में अपनी नई पहचान बना पायीं जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा है।

वह **APSWDP** द्वारा दी गई सिलाई **Training** से बहुत खुश थीं। उनका कहना था कि इस **Training** के द्वारा ही मैने अपने हुनर को पहचाना था। आज वो सिलाई कर लगभग 3000 रुपये प्रति महीना कमा लेती है जिसको वो अपने परिवार को अच्छी परवरिश देने में खर्च कर रही हैं। उनका परिवार तथा समाज उनको आज गर्व की नज़रों से देखता है क्योंकि वो आज आत्मनिर्भर हैं। इस सबका श्रेय वो उषा तथा **APSWDP** तथा उसके कार्यकर्ताओं को देना चाहती

हैं। जो समाज में महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका प्रदान करते हैं तथा हर संभव मदद भी करते हैं। आज गीता आर्थिक तथा सामाजिक तौर पर एक खुशहाल जिन्दगी जी रही हैं।

***

12. मरी जागरूकता

अपना सिर उठाकर आज समाज म जीना महिलाआ के लिए आसान हो गया है। वह अपनी आजादी से पढ–लिख सकती है और काम कर सकती है, कान्सल में रहने वाली कविता का यह कहना है।

कविता जो गाँव की साधारण सी लडकी है जिसने 12 वीं की पढ़ाई के साथ–साथ अपनी सिलाई का शौक भी जारी रखा । और अपने हुनर को रोजगार बनाकर आत्मनिभर होना सीखा है।

आज कविता घर में उषा सिलाई स्कूल चलाकर 3000 रुपये से ज्यादा कमा रही है जिससे वह अपनी पढ़ाई पर कुछ खर्चा कर रही हैं और अपने परिवार को भी सहारा दिया है। गाँव की महिलाएँ उनके पास सिलाई सीखकर आत्मनिर्भर हो रही हैं। पर कविता चाहती हैं कि महिलाओं को और ज्यादा सीखना चाहिए ताकि वह अपने हुनर को और निखार सकें और अच्छा काम कर सकें। वह उषा का धन्यवाद करती हैं जिसने उसको यह मौका दिया ।

कविता ने **APSWDP** के द्वारा चलाया गया **Training Programme** की सराहना करते हुए कहा है कि उस **Progamme** के कारण ही उन्होंने अपने हुनर को पहचाना तथा उसको लोगों के सामने लाकर समाज में अपनी अलग पहचान बनाई तथा समाज में अपने परिवार के नाम को भी चमकाया हालांकि कविता अपन इस सिलाई स्कूल को उच्च स्तर पर ले जाने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकीं, जिसका कारण है पढ़ाई के कारण समय की कमी, लोगों की सिलाई के

प्रति कम होती दिलचस्पी, लेकिन फिर भी वह इसके लिए लगातार प्रयास कर रही हैं और वह **ASPWDP** की पूरी टीम का धन्यवाद करती हैं, जिन्होंने उसे आगे बढ़ने का मौका दिया।

***

13. इच्छाओं के पंख

रीत् एक गाँव की साधारण सी लडकी है जो 12वीं पास हैं और उसका शौक था सिलाई करने का। रीतू ने लगभग एक साल पहले उषा सिलाई ट्रेनिंग शुरू की थी उसके बाद उसने उषा सिलाई स्कूल चलाना शुरू किया।

शुरू–शुरू में अपनी पढाई के कारण स्कूल चलाने में दिक्कतें आयीं मगर फिर भी कुछ गाँव को लड़कियाँ सिलाई सीखने के लिए आयीं। उसने अपनी कोशिश जारी रखी मगर ज्यादा सफल ना हो सकी क्यांकि उसका कहना है घर के पास सरकारी सिलाई सेंटर खुला हुआ हैं जहाँ पर सिलाई मुफ्त में सिखाई जाती है। जिसके कारण ज्यादा लड़कियाँ और महिलाएँ नहीं आती और सीखने के लिए पैसा भी कम मिलता है।

मगर फिर भी उसने अपना काम जारी रखा, कुछ लड़कियां को मुफ्त में भी सिखाया और अपना आत्म विश्वास नही खोया।

इस तरह रीतू भी सिलाई स्कूल को सफलतापूर्वक नही चला पाई पर फिर भी उसने आत्मनिर्भर होना सीख ही लिया और ए.पी.एस.डब्लु.डी.पी. और उषा का धन्यवाद करती हैं।

आज रीतू सिलाई से लगभग 2000 से 3000 रुपये प्रति महीना कमा रही हैं जिसको वो अपनी पढ़ाई पर खर्च कर रही हैं। वह आज आर्थिक तौर पर सशक्त हैं तथा अपने परिवार की आर्थिक मदद करके वो गर्व महसूस करती हैं।

***

14. नई आशा

मनप्रीत गाँव में रहने वाली साधारण से परिवार की लडकी हैं जिनके पिता जी भी सिलाई का काम करते हैं और उनको भी यही शौक हुआ।

मनप्रीत ने एक साल पहले उषा सिलाई ट्रेनिंग लो थी और काफी कुछ सीखा और उषा सिलाई स्कूल चलाना शुरू किया मगर गाँव में सरकारी सिलाई सैंटर होने के कारण ज्यादा महिलाएं सीखने नहीं आयीं, यही कारण हुआ कि स्कूल को सफलतापूर्वक चलाने में असफल रही।

मनप्रीत साथ–साथ पढाई भी करती हैं और सिलाई का काम भी।

पहले पहले कुछ लड़कियाँ आयीं सीखने के लिए जिनको मनप्रीत ने सिलाई सिखाई, इससे वो एक अध्यापिका जैसा महसूस करती हैं। कुछ मुश्किलं आयीं जिसके कारण ये सिलाई स्कूल को आगे ले जाने में असफल रही पर वो अब भी इस स्कूल के लिए काम कर रही हैं और इसको आगे ले जाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रही हैं।

फिर भी ऊषा और ए.पी.एस.डब्लु.डी.पी. का धन्यवाद करती हैं। जिन्होने कुछ नया सोखने का मौका दिया, यह कहना है मनप्रीत का।

आज मनप्रीत सिलाई में अपने पिता जी की मदद तो करती ही है साथ ही वो खुद भी सिलाई से लगभग 3000 रुपये प्रति महीना कमा कर उनकी आर्थिक तौर पर भी मदद करती हैं।

जिससे उनके परिवार तथा समाज में उनको इज्जत तथा गर्व की नज़रों से देखा जाता है।

***

15. एक–उमंग

आज सामाज में मर्दो के साथ–साथ महिलाएँ भी घर को चलाने में अपना पूरा योगदान देना चाहती हैं, और योगदान कर भी रही हैं।

पूजा ने भी अपनी जिंदगी में इस बात को लागू किया। उनका कहना ह कि सिलाई–बुनाई उनका शौक है । वह अपने विवाहित जीवन से पहले भी अपने शौक को लेकर चल रही थीं। सिलाई करना उनका पुराना शौक था यही धीरे–धीरे उनका रोजगार बन गया। उनका कहना है कि शादी के बाद भो उन्होने इसको जारी रखा ।

उषा सिलाई ट्रेनिंग को पूरा करके उनको काफी कुछ सीखने को मिला जो कुछ नया सीखा उसको अपने काम में लाकर अपने सिलाई के काम को और ज्यादा बढाया और प्रभावशाली बनाया।

उषा सिलाई स्कूल को चलाकर और दूसरी लड़कियां और महिलाओं को सिखाकर उनको बहुत अच्छा लगा। अपने हुनर को दूसरों मे बाँटकर उन्हें किसी गुरू की तरह अहसास हुआ। और उनका कहना है कि चाहे बहुत सारी लड़कियाँ और महिलायें नहीं आयीं पर उनको एक स्कूल चलाने की प्रेरणा मिली।

आज पूजा की मासिक आय लगभग 4000 रुपये प्रति महीना है। जिसको वो अपने परिवार की प्रगति के लिए खर्च कर रही हैं। सिलाई तथा ट्रेनिंग की वजह से वो आर्थिक रूप से सशक्त है।

***

Project Funded By: USHA Social Service, USHA International Ltd. Gurgaon, India
Project implemented By : Association of Professsional Social Workers
& Development Practitioners (APSWDP), Chandigarh, India.
WWW.APSWDP.ORG WWW.USHAINITIATIVES.COM